केन्द्रीय विद्यालय संगठन

लखनऊ संभाग

प्रश्न-कोष

कक्षा - X

विषय - हिन्दी

सत्र 2008—09

–: मुख्य संरक्षक :–

श्री पी.आर.एल. गुप्ता, (सहायक आयुक्त)

श्री हरगोपाल (शिक्षाधिकारी)

–: संरक्षिका :–

श्रीमती कुसुमलता

(प्राचार्य, के. वि. आर.डी.एस.ओ., लखनऊ)

–: कार्यकर्तागण :–

श्री एन0 ए0 नक़वी, टी0जी0टी0 (हिन्दी)

श्रीमती समता श्रीवास्तव, टी0जी0टी0 (हिन्दी)

श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, टी0जी0टी0 (हिन्दी)

श्रीमती गीता पाण्डेय, टी0जी0टी0 (हिन्दी)

प्रश्न – कोष

कक्षा – X

हिन्दी

प्रश्न 1 – अपठित गद्यांश

प्रश्न 2 – अपठित पद्यांश

प्रश्न 3 – निबंध लेखन

प्रश्न 4 – पत्र लेखन

प्रश्न 5 – क्रिया भेद– अकर्मक, सकर्मक, मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया
अव्यय–समुच्चयबोधक, क्रिया विशेषण और अन्य अविकारी शब्द

प्रश्न 6 – पद–परिचय

प्रश्न 7 – वाक्य भेद– रचना के अनुसार रचनान्तरण

प्रश्न 8 – वाच्य, वाच्य परिवर्तन

प्रश्न 9 – अलंकार

प्रश्न 10 – अर्थबोध (कविता)

प्रश्न 11 – विषय–वस्तु (कविता)

प्रश्न 12 – संदेश/जीवन मूल्य (कविता)

प्रश्न 13 – अर्थबोध (गद्य)

प्रश्न 14 – विषय–वस्तु (गद्य)

प्रश्न 15 – संदेश/विचार (गद्य)

प्रश्न 16 – कृतिका से निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 17 – कृतिका से लघूत्तरात्मक प्रश्न

(खण्ड–क)

प्रश्न 1– निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

ज़ाकिर साहब के बारे में कुछ बातें आविस्मरणीय हैं। 13 मई 1967 को राष्ट्रपति का पद सँभालते हुए उन्होंने कहा था, ''सारा भारत मेरा घर है, मैं सच्ची लगन से इस घर को मज़बूत और सुंदर बनाने की कोशिश करूँगा, ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो, जिसमें इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो।'' उनकी विनम्रता ऐसी थी कि उन्होंने कहा था, '' मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारी जनता ने इस उच्चतम पद के लिए निर्वाचित करके मुझपर, जो विश्वास प्रकट किया है, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह भावना इस वजह से और भी प्रबल हो जाती है कि भारत के महान सपूत डॉ0 राधाकृष्णन के बाद मुझसे इस पद को सँभालने के लिए कहा गया। मैं उनके क़दमों पर चलने की कोशिश करूँगा, लेकिन उनकी बराबरी कैसे कर सकूँगा?''

वे भारत के असली सपूत थे, इसका सबूत उन्होंने पदारूढ़ होने के एक दिन पहले, तब किया, जब वे दिल्ली में श्रृंगेरी के जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से भेंट करने गए। जगद्गुरु के सामने पुष्प और फल रखते हुए उन्होंने कहा था– ''आपका आशीर्वाद चाहिए'' और शंकरचार्य ने राष्ट्रपति के सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया था। ऐसी ही एक और घटना याद आती है। उपराष्ट्रपति–निवास के अहाते में एक दिन सवेरे घूम रहे थे, तो देखा कि माली के घर में कीर्तन हो रहा है। फिर क्या था, टहलते हुए उधर चले गए और सबके साथ एक कोने में दरी पर बैठ गए। जब कुर्सी लाने को कहा गया तो बोले, 'भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।'' और दरी पर ही बैठे रहे। पटियाला में पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोविंद सिंह के संस्थान की नींव रखने को जब आपसे कहा गया, तो बोले, ''आपने मुझसे इस पवित्र संस्थान की नींव रखने को कहा है। इससे मुझे याद आता है कि अमृतसर में दरबार साहब की नींव डालने के लिए भी एक मुसलमान को ही बुलाया गया था।'' और यह कहते–कहते उनका गला भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे। बड़े–बड़े योद्धा सिक्ख सरदार श्रोताओं की भी उस समय आँखें भर आईं।

अपने साफ–सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरुचि से सँवारी सफेद दाढ़ी के बीच चमकते हलके गुलाबी, गौरवर्ण मुखमंडल से ज़ाकिर साहब प्रेम और आत्मीयता में गांधी जी के आंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएँ, इस संबंध में उन्होंने एक बार कहा था, ''आप आज्ञा दें, तो इस अवसर से लाभ उठाकर गांधी जी के संबंध में कुछ आपसे कहूँ। इससे उनको जानने और समझने, उनके काम को समझने और उसमें जी जान से लगना ज़रा सरल हो सकता है। यह इसलिए और भी करना चाहता हूँ कि अब दिन–पर–दिन उन लोंगों की संख्या घट रही है, जिन्होने गांधी जी को देखा था, उनके साथ काम किया था, उनके बताए हुए रास्ते पर चले थे। जब के दुनिया से गए, तो ये लोग बच्चे थे। बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे। उनकी गिनती अब दिन–पर–दिन बढ़ती ही जाएगी। नया काल होगा, नए हाल होंगें, नए जंजाल होंगें, ऐसा न हो कि यह नई नस्ल गांधी जी और उनके कार्यों

की तह में जो विचार थे; उनको भुला बैठे। ऐसा हुआ, तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जाएगी।''

एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद जी का तिलक करने के लिए कहा। ज़ाकिर साहब खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अख़बारों ने ऐतराज़ किया। ज़ाकिर साहब ने जवाब दिया ''इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ, किसी खास धर्म का नहीं।''

प्रश्न–

(क) राष्ट्रपति पद सँभालते हुए डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने क्या कहा था?

(ख) जाकिर साहब ने सबसे पहले किससे आशीर्वाद प्राप्त किया और क्यों?

(ग) माली के घर ज़ाकिर उन्होंने क्या किया और क्यों?

(घ) किस विशेषता के कारण ज़ाकिर हुसैन गांधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे?

(ड़) उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(च) मूल्यवान पूँजी किसे कहा गया है और क्यों?

(छ) उर्दू अख़बार वालों ने किस कारण एतराज़ किया?

(ज) उर्दू अख़बार वालों को उन्होंने जो जवाब दिया, उससे ज़ाकिर जी बारे में क्या धारणा बनती है?

(झ) 'जिसे भुलाया न जा सके'– इन अनेक शब्दों के लिए एक शब्द गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(ञ) 'उनकी गिनती अब दिन–पर–दिन बढ़ती ही जाएगी', वाक्य में से निपात छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 2– निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

इन नए बसते इलाक़ों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए–नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का घर था इकमंजिला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता हूँ
यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो–क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी, ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

प्रश्न–

(क) नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?

(ख) कविता में कौन–कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?

(ग) कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

(घ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया।

(खण्ड–ख)

प्रश्न– 3 दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए।

1. मजदूर दिवस

(क) भूमिका
(ख) विभिन्न दिवस मनाने का महत्व
(ग) कब और क्यों मनाया जाता है
(घ) मजदूर के महत्व का रेखांकन
(ड.) इस दिवस से प्राप्त संदेश
(च) उपसंहार

2. समय – धन से बढ़कर

(क) समय का महत्त्व
(ख) समय नियोजन से ही सफलता
(ग) समय धन से महत्त्वपूर्ण है
(घ) विद्यार्थियों के लिए समय का विशेष महत्व
(ड.) उपसंहार

3. वन रहेंगे – हम रहेंगे

(क) भूमिका–वनों का स्वरूप
(ख) वनों का जीवन में महत्त्व
(ग) वन जीवन के आधार
(घ) वनों की वर्तमान स्थिति
(ड.) इसके कारण, प्रभाव और उपाय
(च) वनों की स्थिति सुधार में हमारा योगदान
(छ) उपसंहार

4. राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थी की भूमिका

(क) भूमिका
(ख) विद्यार्थी– राष्ट्र की सच्ची पूँजी
(ग) देश का भविष्य
(घ) देश के प्रति विद्यार्थियों का योगदान
(ड.) उपसंहार

5. शिक्षा और रोजगार

(क) भूमिका
(ख) प्राचीन काल में शिक्षा

(ग) शिक्षा का महत्त्व और उद्देश्य
(घ) शिक्षा और रोजगार का संबंध
(ड.) शिक्षा और वर्तमान स्थिति
(च) रोजगार पर उसका प्रभाव
(छ) स्थिति में सुधार के उपाय
(ज) उपसंहार

6. बढ़ती तकनीक – सुविधा या समस्या?

(क) भूमिका
(ख) तकनीक क्या है?
(ग) भिन्न क्षेत्रों में भिन्न तकनीकें
(घ) तकनीक से प्राप्त सुविधाएँ
(ड.) तकनीकों से उत्पन्न समस्याएँ
(च) समस्याओं का उपयुक्त समाधान
(छ) उपसंहार

7. बाढ़ का विनाशकारी दृश्य

(क) भूमिका
(ख) प्राकृतिक आपदाएँ
(ग) बाढ़ आने के कारण
(घ) बाढ़ का विनाशकारी भयावह रूप
(ड.) बाढ़ से हानियाँ
(च) बाढ़ के बाद के विनाश का दृश्य
(छ) बीमारियों की आशंका
(ज) बचाव के उपाय
(झ) उपसंहार

8. रियलिटी शो – प्रतिभा की सच्ची खोज

(क) भूमिका
(ख) टी.वी. कार्यक्रमों में आता बदलाव
(ग) लक्ष्य प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम
(घ) लक्ष्य प्राप्त कर समाज के लिए योगदान
(ड.) उपसंहार

प्रश्न– 4

1. परिवहन निगम के अध्यक्ष को पत्र लिखिए जिसमें आपके गाँव/कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध हो।
2. अपने क्षेत्र में पेयजल की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने जिला – स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।
3. गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।
4. समाज में बढ़ती हुई असुरक्षा के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए 'नवभारत टाइम्स' नामक दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
5. वन – विभाग द्वारा लगाए गए वृक्ष सूखते जा रहे हैं इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी प्रसिद्ध दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखो।
6. अपने क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप का वर्णन करते हुए उचित कार्यवाही के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखो।
7. वाद–विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर छोटी बहन को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।
8. कार–दुर्घटना में मित्र के पिता की मृत्यु हो जाने पर मित्र को एक संवेदना पत्र लिखिए।
9. नित्य प्रातःकाल उठकर खुली हवा में घूमने और व्यायाम करने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए।

10. परीक्षा में कम अंक प्राप्त करने पर अपने असंतुष्ट और दुखी मित्र को सांत्वना भरा पत्र लिखिए।

(खण्ड – ग)

प्रश्न– 5 (क) क्रिया भेद– अकर्मक–सकर्मक, मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया।

1. क्रिया किसे कहते हैं? इसके भेद उदाहरण सहित बताइए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया–पद छाँटकर लिखिए–
   (क) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
   (ख) मेरी अध्यापिका पढ़ा रही है।
   (ग) सुरेश चंडीगढ़ जाएगा।
   (घ) बच्चे खाना खा चुके हैं।
   (ड.) नेहा बाज़ार जाएगी।
   (च) दादा जी समाचार सुना रहे हैं।
   (छ) लड़की आँगन में सो रही है।
3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया–पदों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए–
   (क) बच्चे निबंध लिख रहे हैं।
   (ख) लड़कियाँ दौड़ रही हैं।
   (ग) मीता दूध पीकर बाज़ार गई।
   (घ) माली पौधे लगा रहा है।
   (ड.) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
   (च) गुरदीप ने पुस्तक पढ़ी।
   (छ) छोटा बच्चा रोता है।
   (ज) राम ने निबंध लिखा।
   (झ) लड़की आँगन में सो रही है।
   (ञ) प्राचार्य जी ने सभा में भाषण दिया।
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दी गई धातुओं के उचित रूप से कीजिए–
   (क) मोहन ने कल रोहन को पुस्तक .....। (भेज)
   (ख) मैं खाना ..... रहा हूँ। (खा)
   (ग) सभा में अनेक विद्वान ..... हैं। (बैठ)
   (घ) अध्यापिका ने बच्चों को .....। (पढ़)
   (ड.) सोहन खाना देकर .....गया। (चल)
   (च) सीता ने चाय .....। (बन)
   (छ) माँ भिक्षुक को भोजन .....है। (दे)
   (ज) माली पौधों को ..... रहा है। (सींच)
   (झ) हलवाई मिठाई ..... रहा है। (बन)

(ञ) प्रधानाचार्य जी कक्षा में .....। (आ)

5. निम्नलिखित वाक्यों की रेखांकित क्रिया को सकर्मक क्रिया में बदलिए–
   (क) कपड़ा फटा।
   (ख) पेड़ कटा।
   (ग) चाय बनी।
   (घ) नाव चलने लगी।
   (ड.) दरवाज़ा खुल गया।
   (च) बाँध टूट गया।
   (छ) पक्षी उड़ने लगा।
   (ज) पतंग उड़ रही है।
   (झ) मच्छर भाग रहा है।
   (ञ) इमारत गिर गई।
   (ट) पंखा चलने लगा।
   (ठ) चिड़िया उड़ गई।
   (ड) चट्टान टूट गइ।
   (ढ) घड़ा भर गया।
   (ण) दूध गिर गया।
   (त) यात्री ठगे गए।
   (थ) वायुयान उड़ने लगा।
   (द) बच्चा हँसा।
   (ध) दादा जी पलंग पर लेट गए।
   (न) पौधा लग गया।
6. निम्नलिखित वाक्यों में से मुख्य तथा सहायक क्रियाएँ अलग–अलग करके लिखिए–
   (क) आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।
   (ख) हलवाई मिठाई बना रहा था।
   (ग) पिता जी क्रोध से उबल पड़े।
   (घ) अध्यापिका ने बच्चों को काम देकर छोड़ दिया।
   (ड.) दर्जी ने कपड़े सिल दिए थे।
   (च) मजदूरों ने इमारत बना दी।
   (छ) अब मेहमान अपने घर से चल चुके होंगे।
   (ज) आया ने बच्चों को खाना खिला दिया है।
   (झ) गाड़ी स्टेशन से चल पड़ी।
   (ञ) बच्चा काम करके चला गया।
7. रेखांकित क्रिया का भेद लिखिए–
   (क) मोहन घर जाता है।
   (ख) नरेश पत्र लिखता है।

(ग) आपने किराया क्यों नहीं दिया।
(घ) मैंने मोहन को एक गीत सुनाया।
(ड.) मेरे दादा जी गाँव में रहते हैं।
(च) सोनल तैरती है।
(छ) माता ने अपनी बेटी को घड़ी दी।
(ज) सब्ज़ीवाला सब्ज़ी लाया।
(झ) रोहन चित्र देखता है।
(ञ) बच्चे जानवर देखकर डर जाते हैं।
(ट) बच्चा रोता है।
(ठ) क्या मैं भी भीतर आ सकता हूँ।
(ड) मोहन देर तक सोता है।
(ढ) सोहन अधिकारी बन गया।
(ण) नेहा गीत गाने लगी।
(त) गेंद उछल रही है।
(थ) बच्चे हँस रहे थे।
(द) लड़के रोने लगे।
(ध) उसने फल खरीदे।
(न) हम आज सो नहीं सके।
(क) बच्चा रोता है।
(फ) नरेश पत्र लिखता है।
(ब) क्या मैं भी भीतर आ सकता हूँ।
(भ) आपने किराया क्यों नहीं दिया?
(म) किराएदार को मकान दिखा दो।
(य) यह निबंध किससे लिखवाया?
(र) रवि बहुत तेज़ दौड़ रहा है।
(ल) मोहन देर तक सोता है।
(व) मैंने मोहन को एक गीत सुनाया।

8. निम्नलिखित वाक्यों मे से क्रियापद छाँटकर क्रिया–भेद भी लिखए–
(क) एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।
(ख) नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।
(ग) ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।
(घ) अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।
(ड.) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।
(च) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक–मिर्च के संयोग से चकमती खीरे की फाँकों की ओर देखा।
(छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।

(ज) जेब से चाकू निकाला।
(झ) रवि बहुत तेज़ दौड़ रहा है।
(ञ) वे लोग सबको उपदेश देते हैं।
(ट) उसे फलों का रस पसंद है।
(ठ) छोटा बच्चा रो रहा है।
(ड) ड्राइवर गाड़ी चला रहा है।
(ढ) माँ बच्चे को खाना खिलाती है।
(ण) माली फूलों के पौधे लगा रहा है।
(त) लड़की घर के अंदर खेल रही है।
(थ) सीता पढ़कर जा रही है।
(द) नेता महोदय दो घंटे भाषण देकर थक गए।
(ध) मैं आज आपसे मिलने आऊँगा।
(न) मुझे आपकी चिट्ठी जाकर मिली।
(प) वह कुर्सी से गिर गया।
(फ) सोहन किताब पढ़ रहा है।
(ब) बच्चे भजन सुना चुके हैं।
(भ) रेणु हमेशा हँसाती रहती है।
(म) वे सभी आगरा चले गए हैं।
(य) मेरी माता जी खाना बना रही हैं।

प्रश्न 5 (ख) अव्यय–समुच्चय बोधक क्रिया–विशेषण और अन्य अविकारी शब्द

1. अव्यय के भेद बताते हुए प्रत्येक के दो–दो उदाहरण दीजिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया–विशेषण पदों को रेखांकित करके उसका प्रकार भी बताइए–
   (क) मोहन तेजी से दौड़ा।
   (ख) मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ।
   (ग) वह मेरी बात चुपचाप सुन रहा था।
   (घ) धर्म की सर्वत्र विजय होती है।
   (ड.) सुधीर अचानक खड़ा हो गया।
   (च) नेहा धीरे–धीरे चल रही थी।
3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित पद से कीजिए।
   (क) जिन विशेषणों से क्रिया की मात्रा या उसके परिमाण का बोध होता है, उन्हें .... कहते हैं।
   (ख) जिन अविकारी पदों से क्रिया के होने की रीति या विधि का पता चलता है, उन्हें .. .. कहते हैं।
   (ग) क्रिया के होने के समय की सूचना देने वाले क्रिया–विशेषण .....कहलाते हैं।

(घ) क्रिया होने के स्थान या दिशा का बोध कराने वाले क्रिया–विशेषण ..... कहलाते हैं।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय पद से कीजिए।

(1) मेरा घर विद्यालय ..... है।
(2) धन ..... कोई नहीं पूछता है।
(3) बालक चाँद ..... देख रहा है।
(4) पेट्रोल के ..... कार नहीं चल सकती।
(5) अच्छे चरित्र ..... जीवन निरर्थक है।
(6) मोहन मित्रों ..... सैर करने गया है।
(7) माँ बेटे ..... घर जा रही थी।
(8) बंदर छत ..... उछल–कूद मचा रहे थे।
(9) बच्चे कमजोर थे ..... बीमार पड़ गए।
(10) सीता ..... गीता सगी बहनें हैं।
(11) मैंने सोहन से पुस्तक माँगी ..... उसने मना कर दिया।
(12) सभी जानते हैं..... पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।
(13) गरिमा कमज़ोर थी, ... बीमार पड़ गई।
(14) .....! यह क्या हो गया।
(15) .....! तुम तो पीछे ही पड़ गए।
(16) .....! तुमने तो कमाल कर दिया।
(17) .....! इसी प्रकार अच्छे–अच्छे काम करते रहो।
(18) .....! जो एक कदम भी आगे बढ़ाया।
(19) ..... आज गाड़ी .....आ गई।
(20) मैं व्यस्त था ..... तुम्हारे घर न जा सका।
(21) मैं दिल्ली से ..... वापस आया हूँ।
(22) ..... तुमने ..... उन्नति की है।
(23) वह शीघ्र चला गया ..... गाड़ी पकड़ सके।
(24) मैं मंच ..... बैठा था।
(25) ..... तेरे भाग्य में यही लिखा था।
(26) मोहन ..... उसके पिता घूमने गए।
(27) पिता जी ने कहा था ..... मन लगाकर पढ़ना।
(28) ..... कोई है।
(29) मैं दिल्ली ..... जा रहा हूँ।
(30) तुम्हें यह कार्य ..... करना चाहिए था।
(31) तुम .....निराश हो गए।
(32) जीवन ..... परिश्रम करना चाहिए।
(33) मैं स्कूल ..... जा रहा हूँ।
(34) कुणाल ..... बोल रहा है।

(35) वह ..... खाना खा रहा है।
(36) करण काम करते–करते ..... थक गया था।
(37) ..... महंगाई बढ़ती जा रही है।
(38) बच्चो, ... मत जाओ।

प्रश्न– 6. रेखांकित पदों का व्याकरणिक या पद–परिचय लिखिए

1. जल्दी चलो, वरना गाड़ी छूट जाएगी।
2. लोग धीरे–धीरे उस संकरे रास्ते से ताजमहल की ओर बढ रहे थे।
3. कल हमने ताजमहल देखा।
4. जब मैं पहुँचा तो रमेश सो रहा था।
5. चिड़िया पिंजरे में बंद है।
6. भूकंप से हजारों की जाने गई।
7. जब भूकंप आया तो लोग सो रहे थे।
8. ऐसा भूकंप पहले कभी नहीं आया।
9. यह किताब मेरी है।
10. ईमानदारी बड़ी दुर्लभ वस्तु है।
11. हम मसूरी घूमने गए।
12. प्रेमचंद महान कथाकार थे।
13. तुलसीदास महान कवि थे।
14. भारत महान देश है।
15. प्रगीत दसवीं कक्षा में पास हो गया है।
16. वह घर गया।
30. मोहन पाँचवी कक्षा में पढ़ता है।
31. मेरी बात पर वह बहुत हँसा।
32. वह घर में छिपा है।
34. शोभा साइकिल से गई।
35. सोहन इसी घर में रहता है।
43. राजीव गांधी जी देश में स्वच्छ प्रशासन चाहते थे।
47. मैं नहा कर पुस्तक पढूँगा।
51. वह कल आएगा।
52. मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

प्रश्न– 7 वाक्य भेद– रचना के अनुसार रचनान्तरण

क–रचना के आधार पर वाक्य–भेद का नामोल्लेख कीजिए–

1. मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ, जिसने तुम्हारी साइकिल चुराई है।
2. प्रातःकाल होता है और चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।
3. जो सबकी भलाई करता है, वह सबका प्रिय होता है।

4. जो समुद्र में गोता लगायेगा, वह ही मोती पाएगा।
5. जब भी जाना चाहो, आप चले जाना।
6. जब भी मुझे आवश्यकता हुई, मित्रों ने मेरी सहायता की।
7. आज ऐसा व्यक्ति कौन है, जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो।
8. वह आ जाए तो उसे मेरे पास भेज देना।
9 द्वितीय प्रश्न करो अथवा तृतीय प्रश्न करो।
10. आज मैं बीमार था, इसलिए विद्यालय नहीं जा सका।

ख–सरल या साधारण वाक्य में परिवर्तित कीजिए–

1. मजदूर खूब मेहनत करता है, परन्तु उसे उसका लाभ नहीं मिलता।
2. जो लोग परिश्रम करते है, उन्हे अधिक समय तक निराश नहीं होना पड़ता।
3. मेरा विचार है कि आप घूमने चलें।
4. शशि गा रही है और नाच रही है।
5. बालिकाएं गा रही हैं और नाच रही हैं।
6 आप खूब परिश्रम करते हैं और अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।
7. मैं बाजार जाऊँगा और कपड़े खरीदूँगा।
8. शाहनी ने हिचकियों को रोका और रुँधे गले से कहा।
9. मैंने गौरा को देखा और उसे पालने का निश्चय कर लिया।
10. गायें घास खा रही हैं और बकरियाँ भी घास खा रही हैं।

ग– मिश्र वाक्य में बदलिए–

1. चातक थोड़ी देर तक चुप रहकर बोला।
2. किवाड़ खुलने की आवाज पर बुद्धन चौंका।
3. वह खाना खाकर सो गया।
4. घंटी बजी। छात्र कक्षा से बाहर निकले। उन्होंने अपनी पुस्तक उठाई। वे अपने घर चले गये।
5. मैंने एक दुबले–पतले व्यक्ति को भीख माँगते देखा।
6. तुम बस रुकने के स्थान पर चले जाओ।
7. वह फल खरीदने के लिए बाजार गया।
8. अध्यापक अपने शिष्यों को अच्छा बनाना चाहता है।
9. मैंने एक व्यक्ति को देखा। वह बहुत दुबला–पतला था।
10. सड़क पार करता हुआ एक व्यक्ति बस से टकरा कर मर गया।

घ– संयुक्त वाक्य में बदलिए–

1. कम रोशनी में पढ़ने के कारण विद्यार्थी अपनी आँख गवाँ बैठा।
2. मैंने उसे पढ़ाकर नौकरी दिलवाई।
3. वह पढ़ाई खत्म करके खेलने गया।
4. अध्यापक ने हाजिरी लेकर पढ़ाना शुरू किया।
5. प्रातःकाल होने पर चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।

6. उससे मिलने के लिए आप द्वार पर प्रतीक्षा करें।
7. दो नदियों के मिलने के स्थान को संगम कहते हैं।
8. अपराधी को सजा मिली।
9. सड़क पार करता हुआ बालक स्कूटर से टकरा कर मर गया।
10. अध्यापक के मारने से बालक रूठ गया।

ड. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित उपवाक्य का नाम बताइए–

1. रहीम बोला कि मैं कल हैदाबाद जा रहा हूँ।
2. महात्मा गाँधी ने कहा कि गाय करुणा की कविता है।
3. मुझे एक व्यक्ति मिला, जो बहुत पढ़ा लिखा था।
4. जो व्यक्ति मधुर भाषी होता है, उसे सभी चाहते हैं।
5. मुझे विश्वास है कि रेखा अवश्य उत्तीर्ण होगी।
6. मैंने एक फूल देखा, जो खिल रहा था। (आश्रित उपवाक्य छाँटिए तथा नाम लिखिए)
7. सभी जानते हैं कि वह विद्ववान है।
8. यह वही व्यक्ति है, जिसने कल मुझे गिरने से बचाया था।
9. जहाँ–जहाँ मैं गया, मेरा आदर–सत्कार हुआ।
10. जब तुम स्टेशन पर पहुँचे, तब मैं घर से चला।

च– आश्रित उपवाक्य अलग करके बताइए कि वह किस प्रकार का है–

1. जब वह यहाँ आया, मैं सो रहा था।
2. वह आदमी जो कल आया था, मेरा मित्र है।
3. मैंने एक व्यक्ति देखा, जो बहुत लंबा था।
4. जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया।
5. उसने कहा कि मैं कल आगरा जाऊँगा।
7. वह पुस्तक जो आप चाहते हैं, लाइब्रेरी में नहीं है।
9. मेरा उद्देश्य है कि मैं मनुष्य मात्र की सेवा करूँ।
10. मैंने सोचा कि वह जरूर आयेगा।
11. हमें चाहिए कि हम केवल बातों में ही समय नष्ट न करें।
12. तथागत ने कहा, तुम्हें अपना दीपक स्वंय बनना है।
13. वह जानता है कि मैं क्या चाहता हूँ।
14. गीता में कहा गया है कि कर्म पर ही मनुष्य का अधिकार है।
15. ज्यों ही मैं स्कूल से बाहर आया, वर्षा शुरू हो गई।
16. उसने कहा तो था, किन्तु वह आया नहीं।
17. इन्हें क्षमा करें, क्योंकि इनसे अनजाने में भूल हुई है।
18. आप यहाँ के मुखिया हैं कौन नहीं जानता।
19. रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।
20. उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उनपर मेहरबान होगा।
21. अंदर से हूक उठती है कि ऐसा आदमी, अब फिर नहीं आयेगा।

22. छोटे बच्चे थे, तभी मामू के पास बनारस आ गए थे।
23. जैसी शहनाई और उसका बजाना था, वैसा ही उनका जीवन था।

च– निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए–

1. आप द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करें। (संयुक्त)
2. वह अपराधी था, इसलिए उसको सजा मिली। (मिश्र)
3. तुम वहाँ चले जाओ, जहाँ गाडी रुकती है। (सरल)
4. यह वही भारत है, जो सोने की चिड़िया कहलाता था। संयुक्त)
5. सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता (मिश्र)
6. अपराधी होने के कारण उसे सजा मिली। (मिश्र)
7. प्रातःकाल होने पर चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। (संयुक्त)
8. माँ के मारने से बालक रूठ गया। (संयुक्त)
9. मजदूरों को अपनी मेहनत का लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त)
10. संगम उस स्थान को कहते हैं, जहाँ दो नदियाँ आकर मिलती हैं। (सरल)
11. आप उससे मिलना चाहते हैं, इसलिए द्वार पर प्रतीक्षा करें। (सरल)
12. जिसने टोपी पहन रखी है, वह बाबू कहाँ गया? (सरल)
13. यद्यपि वह मंत्री बन गया है, फिर भी उसका व्यवहार मधुर है। (मिश्र)
14. सड़क पार करता हुआ व्यक्ति एक बस से टकराकर गया। (संयुक्त)
15. देश के लिए मर मिटने वाला व्यक्ति ही सच्चा देश–भक्त होता है। (संयुक्त)

प्रश्न 8. वाच्य–कर्तृवाच्य–अकर्तृवाच्य तथा वाच्य परिवर्तन

1. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए–

(क) मुझसे गलती हो गई।
(ख) राम अभी नहीं सोया।
(ग) मजदूरों ने एक साल में यह पुल तैयार किया।
(घ) मुझसे चला नहीं जाता।
(ड.) नर्तकियों द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया गया।
(च) बच्चों से हँसा नहीं गया।
(छ) आपको सूचित किया जाता है।
(ज) मैं बैठ नहीं सकता।
(झ) मैं यह भाषा नहीं पढ सकूँगा।
(ञ) रात भर कैसे जागा जाएगा।
(ट) दूध पिया नहीं जा रहा है।

2. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए–

1. माली के द्वारा पौधों को पानी दिया गया।
2. अध्यापक द्वारा बच्चों को पढाया गया।
3. मेरे द्वारा निबंध लिखा गया।

4. मालिक के द्वारा नौकर को डाँटा गया।
5. मेरे द्वारा खाना खाया जाएगा।

3. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए–

1. माँ बैठ नहीं सकती।
2. चलो, अब सोते हैं।
3. माँ रो भी नहीं सकती।
4. लड़के खेलेंगे।
5. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

1. वह अपनी छोटी–सी दुकान में उपलब्ध गिने–चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।
2. पानवाला नया पान खा रहा था।
3. पानवाले ने साफ बता दिया था।
4. ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे।
5. नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

प्रश्न– 9 अलंकार

1. निम्नलिखित अलंकारों का एक –एक उदाहरण लिखें और परिभाषा भी दें ।

अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण

2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए –

1. सिंधु–सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह।
2. गोपी पद–पंकज पावन की रज जामैं सिर भीजैं।
3. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
4. कल कानन कुंडल मोर पखा उर पै बनमाल विराजति है।
5. कनक कनक ने सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
   यह पाए बौराय है, वह खाए बौराय।।
6. बढत–बढत संपत्ति सलिल, मन–सरोज बढ जाइ।
7. मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए।।
8. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
   पानी गए न ऊबरौ, मोती, मानुष, चून।।
9. जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।
   अब अलि रही गुलाब में, अपत कंटीली डार।।
10. कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए।
    हिम के कणों से पूर्ण मानों, हो गए पंकज नए।।
11. संसार की समर–स्थली में धीरता धारण करो।
12. प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि।
    कालिका–सी किलकि कलेऊ देती काल को।

13. तरनि तनुजा तट–तमाल तरूवर बहु छाए।
14. चरण कमल बंदौं हरिराई।
15. सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलोने गात।
    मनो नीलमणि सैल पर, आतप परयौ प्रभात।।
16. झुक कर मैंने पूछ लिया, खा गया मानों झटका।
17. प्रश्न–चिह्नों में उठी हैं। भाग्य–सागर की हिलोरें।।
18. जोड़कर कण–कण कृपण आकाश ने तारे सजाए।
19. वह बाँसुरी की धुनि कानि परै कुल कानि हियो तजि भाजति।
20. पीपर पात सरिस मन डोला।
21. नभ पर चमचम चपला चमकी।
22. निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है।
23. वैरी–दल की ललकार उठी। वह नागिन–सी फुफकार उठी।।
24. चँवर–सदृश डोल रहे, सरसों के सर अनंत।
25. वन–शारदी चंद्रिका चादर ओढ़े।
26. अब तो कन्हैया जू की चितहू चुराय लीन्हो।
27. छोरटी हैं गोरटी या चोरटी अहीर की।

(खण्ड घ)

प्रश्न– 10 अर्थबोध (कविता)

निम्नांकित पद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

सूरदास

(1)

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत–सोवत स्वप्न दिवस–निसि, कान्ह–कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसो, ज्यों करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी, सुनी न करी।
यह तो 'सूर' तिन्हहिं लै सौंपो, जिनके मन चकरी।

(क) गोपियाँ हरि की तुलना हारिल की लकड़ी से क्यों कर रही हैं?
(ख) कृष्ण के प्रेम में गोपियों की मनोदशा कैसी है?
(ग) गोपियों ने योग का उपहास कैसे किया है?
(घ) 'जिनके मन चकरी' से क्या आशय है?

(2)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।

इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुदिध जानी जो उनकी, जोग सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, परहित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यों अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तो यहै 'सुर' जो प्रजा न जाहिं सताए।

(क) गोपियाँ उद्धव को क्या ताना मार रही हैं?
(ख) 'इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरू ग्रंथ पढ़ाए' में कौन–सा व्यंग्य निहित है?
(ग) पहले के लोगों और अब के लोगों में क्या अंतर है?
(घ) अपना मन पुनः प्राप्त करना गोपियों के लिए सौभाग्यपूर्ण है या दुर्भाग्यपूर्ण? स्पष्ट कीजिए।
(ड) 'सूर' की गोपियों के अनुसार राजधर्म क्या है?

तुलसीदास

(1)

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार–बार मोंहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मै बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमहु अपराधू। बाल दोस गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठारु मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।।
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे।।
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहिं उरिन होतेउँ श्रम थोरे।।
गाधिसुनु कह हृदय हँसि, मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड न ऊखमय। अजहु न बूझ अबूझ।।

(क) 'तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार–बार मोहि लागि बोलावा'– में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
(ख) लक्ष्मण के कठोर वचनों का परशुराम पर क्या प्रभाव पड़ा?
(ग) विश्वामित्र ने परशुराम को शांत करने के लिए क्या किया?
(घ) विश्वामित्र मन ही मन क्यों हँस पड़े?
(ड) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा, न त येहि काटि कुठार कठोर में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए।

(2)

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा।।
मात पितहिं उरिन भए नीकें। गुररिनु रहा सोच बड़ जी के।।
सो जनि हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ व्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।

भृगुबर परसु देखावहु मोही। विप्र विचारि बचौं नृपद्रोही।।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे।।
लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोप–कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन, बोले रघुकुलभानु।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या–क्या व्यंग्य कसे?
(ख) सारी सभा हाय! हाय! क्यों चिल्लाने लगी?
(ग) राम ने लक्ष्मण को नेत्र–संकेत से क्यों रोका?
(घ) लक्ष्मण क्या विचारकर परशुराम को छोड़ रहे थे?
(ङ) 'लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोप–कृसानु और जल सम बचन, बोले रघुकुल भानु'– पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए।

देव

फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधामंदिर
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
बाहर से भीतर लौं भीति न दिखैये 'देव'
दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद।
तारा सो तरुनि तामे ठाढ़ी झिलमिली होति,
मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।
आरसी–से अंबर में आभा–सी उजारी लगै
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद।

(क) कवि और कविता का नाम लिखो।
(ख) सुधामंदिर किसे कहा गया है और वह किसका बना है?
(ग) तरुणियाँ किसे कहा गया है?
(घ) चंद्रमा को किसका प्रतिबिंब कहा गया है और क्यों?

जयशंकर प्रसाद

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथायें आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखो।
(ख) कवि किस असमंजस में है और क्यों?
(ग) कवि को क्या–क्या अच्छा लग रहा है?
(घ) मौन व्यथा से कवि का क्या तात्पर्य है?

सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला'

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन

विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन।
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो–
बादल गरजो।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।
(ख) गरमी का क्या प्रभाव पड़ रहा था?
(ग) कवि बादलों से क्या कहता है?
(घ) वर्षा के बिना लोगों की स्थिति कैसी हो गई है?

अट नहीं रही है

–सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं सांस लेते हो,
घर–घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर–पर कर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर–पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल
कहीं पड़ी है उर में
मंद–गंध–पुष्प–माल
पाट–पाट शोभा–श्री
पट नहीं रही है।

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ख) इस कविता में कवि किसकी सुन्दरता को किस रूप में देखता है?
(ग) फागुन के साँस लेते ही वातावरण में क्या–क्या परिवर्तन हो जाता है?
(घ) 'उड़ने को नभ में तुम पर–पर कर देते हो' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ङ) फागुन के प्रभाव से डालियों का स्वरूप किस प्रकार का हो गया है?

यह दंतुरित मुस्कान

–नागार्जुन

इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क

उंगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी छविमान!

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए?
(ख) माँ बालक के लिए क्या करती है?
(ग) मधुपर्क किसे कहते हैं?
(घ) बालक किस प्रकार देखता है?
(ङ) कवि को वह कैसा लगता है?

फसल

फ़सल क्या है।
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी–काली–संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए?
(ख) फसल को किसका जादू बताया गया है और क्यों?
(ग) फसल के उगने में मनुष्य के हाथों की क्या महिमा है?
(घ) 'रूपांतर है सूरज की किरणों का' का आशय स्पष्ट कीजिए?
(ङ) हवा की थिरकन के सिमटे हुए संकोच से कवि का क्या आशय है?

छाया मत छूना

–गिरिजा कुमार माथुर

(1)

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए?
(ख) भाव स्पष्ट कीजिए–
प्रभुता का शरण बिंब..... रात कृष्णा है।

(ग) छवियों की चित्र–गंध फैली मनभावनी का आशय स्पष्ट करो?
(घ) कवि ने छाया को छूने के लिए मना क्यों किया है?
(ङ) कठिन यथार्थ को पूजने से कवि का क्या अभिप्राय है?
(च) जीवन मे कवि क्या कुछ पाने के लिए दौड़ता फिरा, जो उसे नहीं मिला?

(2)

दुविधा–हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद–रात आने पर
क्या हुआ जो खिला फूल रस–बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए?
(ख) व्यक्ति को रास्ता क्यों नहीं दिखाई देता?
(ग) मनुष्य को क्या–क्या दुख है?
(घ) कवि क्या भूलने की बात कहता है?

कन्यादान

–ऋतुराज

माँ ने कहा पानी में झाँक कर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) कवि तथा कविता का नाम बताइए?
(ख) माँ ने यह क्यों कहा कि चेहरे पर मत रीझना?
(ग) आग के बारे में माँ क्या बताती है?
(घ) स्त्री–जीवन के कौन–कौन से बंधन हैं?

मंगलेश डबराल

–संगतकार

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में

तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

(क) कवि तथा कविता का नाम बताइए?
(ख) गायक कहाँ खो जाता है?
(ग) संगतकार क्या सँभाले रहता है?
(घ) संगतकार मुख्य गायक को नौसिखिया की स्थिति में कैसे लाता है?

प्रश्न– 11 विषय वस्तु (कविता)

सूरदास

1 ''उधौ, तुम हौ अति बड़भागी'' पद में गोपियां क्या संदेश देना चाहती हैं?
2 उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?
3 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन–सी मर्यादा न रहने की बात की गई है?
4 गोपियां प्रेम की पीर द्वारा क्या दर्शाना चाहती हैं?
5 योग–साधना के प्रति गोपियों का दृष्टिकोण कैसा है?
6 कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?
7 उद्धव का चातुर्य बढ़ने का क्या कारण है?
8 गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन–कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?
9 'तै' क्यों अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए'– में गोपियां किससे और क्या अपेक्षा कर रही हैं?
10 राजा का धर्म क्या है? राजधर्म की चर्चा करने से सूरदास तथा उनकी गोपियों की कौन–सी विशेषताएं उभर कर सामने आती हैं?
11 गोपियों ने अपने वाकचातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक् चातुर्य की विशेषताएं लिखिए।

तुलसीदास

12 परशुराम श्रीराम को सहस्रबाहु के समान शत्रु क्यों मानते हैं?
13 आपकी नज़र में परशुराम का क्रोध उचित है या अनुचित? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
14 लक्ष्मण ने धनुष के टूटने के लिए कौन–कौन से तर्क दिए?
15 परशुराम ने क्रोध आने पर भी लक्ष्मण को छोड़ देने की पीछे क्या कारण बताया?
16 पद्यांश के आधार पर परशुराम की दो चारित्रिक विशेषताएं लिखिए।
17 परशुराम ने धरती को राजाओं से रहित क्यों कर दिया था?
18 परशुराम द्वारा कुठार दिखाने पर लक्ष्मण ने क्या व्यंग्योक्तियाँ कीं?
19 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या–क्या विशेषताएं बताईं?
20 शूरवीर तथा कायर में क्या अंतर होता है?

21 अनेक बार कटु वचन बोलने पर भी परशुराम लक्ष्मण को क्यों छोड़ देते थे?
22 विश्वामित्र जी की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए।
23 लक्ष्मण के अनुसार परशुराम किस ऋण को उनके माथे मढ़ने का प्रयास कर रहे हैं?
24 साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो, तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

देव

25 श्रीकृष्ण की मंद मुस्कान की तुलना किससे की गई है और क्यों?
26 ब्रजदूलह कौन हैं? उन्हें जग मंदिर दीपक क्यों कहा गया है?
27 ऋतुराज बसंत के बालरूप का वर्णन परंपरागत बसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है।
28 'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै'– इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
29 'प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद'–पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

आत्म कथ्य

30. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहते हैं?
31. स्मृति को पाथेय बनाने से प्रसाद जी का क्या आशय है?
32. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, उसे उन्होंने कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?
33. 'मेरा रस ले अपनी भरने वाले'–से प्रसाद जी का क्या तात्पर्य है?
34. प्रसाद जी किस कार्य में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं? और इस असमर्थता का क्या कारण है?

'उत्साह'

35 सामाजिक क्रांति या बदलाव में साहित्य की क्या भूमिका होती है?
36 'उत्साह' कविता में बादल किन–किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

अट नही रही है

37 कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?
38 फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

यह दंतुरित मुसकान

39 धूल–मिट्टी से सने बच्चे झोंपडी में खेलते कैसे लगते हैं?
40 यदि बच्चे की माँ माध्यम न होती तो कवि किस–किस से वंचित रह जाता?

फसल

41 कवि ने फसल को हजार–हजार खेतों की मिट्टी का गुण–धर्म क्यों कहा है?
42 मिट्टी के गुण–धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

छाया मत छूना

43 कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?
44 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

कन्यादान

45 आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना?

46 आग रोटियों के लिए है, जलने के लिए नहीं–इस काव्यांश द्वारा समाज में नारी की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है?–'कन्यादान' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

47 'कन्यादान' कविता का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए।

संगतकार

48 'संगतकार' कविता के आधार पर बताइए कि संगतकार किन–किन रूपों में मुख्य गायक–गायिकाओं की मदद करते हैं।

49 सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं? संगतकार कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

50 किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुँच पाते होंगे?–– संगतकार कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न– 12 संदेश/जीवन मूल्य (कविता)

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

सूरदास
(पद)

1– उधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइन पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।

(क) प्रस्तुत काव्यांश किस रचना से लिया गया है?

(ख) काव्यांश की भाषा कौन–सी है?

(ग) यह किस काल की रचना है?

(घ) गोपियों ने किसे बड़भागी कहा तथा क्यों?

(ङ) प्रस्तुत काव्यांश किसके द्वारा रचित है?

2– हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरुग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग–संदेस पठाए।
ऊधौ, भले लोग आगे के, परहित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहें, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यों अनीत करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राजधरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।

(क) प्रस्तुत पद्य किस भाषा में लिखा गया है?

(ख) 'मधुकर' कहकर किसे संबोधित किया गया है?

(ग) अनुप्रास अलंकार छाँटकर लिखिए?
(घ) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?
(ङ) 'हरि राजनीति जान गए हैं' गोपियाँ ऐसा क्यों कहती हैं?

तुलसीदास

3– रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहिं न सँभार।
धनुही सम त्रिपरारि धनु, बिदित सकल संसार।।
(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ किस भाषा में रचित हैं?
(ख) ये पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं?
(ग) इन पंक्तियों में कौन किसे संबोधित कर रहा है?
(घ) दूसरी पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?
(ङ) अनुप्रास अलंकार छाँटकर लिखिए?

4– तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहिं लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सधारि धरेउ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।।
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे।।
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे।।
गाधिसुनु कह हृदय हँसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।।
(क) पहली पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?
(ख) काव्यांश में प्रयुक्त छंदों के नाम लिखिए?
(ग) काव्य–पंक्तियों में मुख्य शैली कौन–सी है?
(घ) कौन–कौन से भिन्न भावों की अनुभूति इस पद्यांश में होती है।
(ङ) प्रस्तुत पंक्तियाँ कहाँ से उद्धृत हैं?

देव
(सवैया, कवित्त)

5–

डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव के
सुमन झिंगूला सोहै तन छवि भारी दै।।
पवन झुलावै, केकी कीर बतरावै 'देव'
कोकिल हलावै–हुलसावै करतारी दै।।
पूरित पराग सों उतारो करे राई नोन।
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।।
मदन महीप जु को बालक बसंत ताहि

प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

(क) निम्न का एक–एक पर्यायवाची लिखिए–

दुम, पल्लव, सुमन, पवन

(ख) यह कौन–सा छंद है?

(ग) इस छंद में हिन्दी भाषा का कौन–सा रूप प्रयुक्त हुआ है?

(घ) 'केकी–कीर', 'हलावै–हुलसावै' में कौन–सा अलंकार है?

(ड.) मदन–महीप में प्रयुक्त अलंकार बताइए।

6–

फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा मंदिर
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए 'देव'
दूध को–सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद।।
तारा–सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति,
मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।
आरसी–से अंबर में आभा सी उजारी लगै
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद।।

(क) इस छंद में हिन्दी भाषा का कौन–सा रूप प्रयुक्त हुआ है?

(ख) यह कौन–सा छंद है?

(ग) 'सिलानि सों सुधारयो सुधा मंदिर'– में कौन–सा अलंकार है?

(घ) 'तारा सी तरुनि' में प्रयुक्त अलंकार बताइए।

(ङ) 'प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद' में प्रयुक्त अलंकार बताइए।

जय शंकर प्रसाद
(आत्मकथ्य)

7–

यह विडंबना अरी सरलते! तेरी हंसी उड़ाऊँ मैं
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की,
अरे खिलखिला कर हँसते उन होने वाली बातों की।।

(क) उपरोक्त पंक्तियों में हिन्दी भाषा का कौन–सा रूप है?

(ख) समान तुक वाले शब्द छाँट कर लिखिए– उड़ाऊँ मैं....., रातों की.....

(ग) उपरोक्त अंश से चार तत्सम शब्द छाँट कर लिखिए।

(घ) उपरोक्त अंश में रस पहचानिए।

8–

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया,
आलिंगन में आते–आते मुसक्याकर जो भाग गया।
जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में,

अनुरागिनी उषा लेती थी, निज सुहाग मधुमाया में।।

(क) उपरोक्त पंक्तियों की भाषा बताइए?

(ख) समान तुक वाले शब्द छाँट कर लिखिए– भाग गया....., छाया में.....

ग) उपरोक्त अंश में कौन–सा रस है? उसका स्थायी भाव भी लिखिए?

(घ) 'मुसक्याकर' शब्द क्या आजकल की बोलचाल की भाषा का है?

(ङ) उपरोक्त अंश से पाँच तत्सम शब्द छाँट कर लिखिए।

9–

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की,
सीवन को उधेड़कर देखोगे क्यों, मेरी कंथा की।
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ,
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ।

(क) पाथेय, पथिक, पंथा शब्दों के अर्थ लिखिए।

(ख) समान तुक वाले शब्द छाँट कर लिखिए– पंथा की....., कहूँ.....,

(ग) उपरोक्त अंश में हिन्दी भाषा का कौन–सा रूप है?

(घ) उपरोक्त अंश से चार तत्सम शब्द छाँट कर लिखिए।

(ङ) प्रथम पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार बताइए?

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

उत्साह

10–

विकल विकल उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाध के सकल जन।

(क) 'विकल–विकल' में कौन–सा अलंकार है?

(ख) यह किस युग की कविता है?

(ग) इन पंक्तियों की भाषा कौन–सी है और कैसी है?

अट नहीं रही है

11–

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर–घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर–पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

क) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा क्या और कैसी है?

(ख) 'सट नहीं रही है, हट नहीं रही है' आदि काव्य–पंक्तियों से कविता में कौन–सा सौंदर्य प्रकट हो रहा है?

(ग) यह किस युग की कविता है?

(घ) 'घर–घर, पर–पर' में कौन–सा अलंकार है?

(ङ) पंस्तुत काव्यांश से तत्सम और तद्भव शब्द ढूँढकर लिखिए।

नागार्जुन (फसल)

12–

फसल क्या है।
और तो कुछ नहीं है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी–काली–संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का

(क) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा क्या और कैसी है?

(ख) उपयुक्त पक्तियों में कवि ने किसे अधिक महत्व दिया है?

(ग) 'सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए?

(घ) प्रस्तुत काव्यांश किस छंद में लिखा गया है?।

दंतुरित मुस्कान

13–

धन्य तुम माँ भी तुम्हारी धन्य।
चिर प्रवासी मैं, इतर, मैं अन्य।
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी छविमान

(क) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा क्या और कैसी है?

(ख) प्रस्तुत काव्यांश किस छंद में लिखा है?

(ग) 'कनखी मार' कर देखने का क्या अर्थ है?

(घ) 'आँखें चार होना' मुहावरे का प्रयोग कवि ने किस अर्थ में किया है?

(ङ) प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त तुकांत शब्द लिखिए?

छाया मत छूना

– गिरिजा कुमार माथुर

14–

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण–बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन
छाया मत छूना
मन होगा, होगा दुख दूना।

1. इसमें किस भाषा का प्रयोग हुआ है?
2. यह कविता किस शैली की है?
3. हर पंक्ति के अंतिम वर्ण का ध्यान में रखकर बताइए कि इसमें कौन–सी विशेषता है?
4. इसकी भाषा लाक्षणिक है या अभिधात्मक?
5. इसमें प्रयुक्त दो तत्सम व दो तद्भव शब्द छाँटिए।

कन्यादान

–ऋतुराज

15–

माँ ने कहा पानी में झाँक कर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

1. किस भाषा का प्रयोग किया गया है?
2. यह कविता किस गुण के कारण प्रभावित करती है?
3. इसमें संस्कृत, तदभव तथा उर्दू शब्दों में से किसकी प्रधानता है?
4. छंद की दृष्टि से यह कविता किस प्रकार का है?
5. प्रयुक्त अलंकारों का उल्लेख कीजिए।

संगतकार

–मंगलेश डबराल

16–

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढस बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार कर स्वर
कभी–कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है।

1. इस कविता की भाषा कौन–सी है?
2. छंद की दृष्टि से यह कविता कैसी है?
3. इसमें प्रयुक्त संगीत–संबंधी शब्द छाँटिए।
4. इसमें प्रयुक्त संस्कृत और तद्भव शब्द लिखिए।
5. छंदमुक्त होते हुए भी यह कविता किस कारण आपको बाँधती है?
6. मुख्य गायक और संगतकार के वर्णन की कौन–सी विशेषता प्रभावित करती है?

17–

और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

1. इस कविता की भाषा कौन–सी है?
2. छंद की दृष्टि से यह कविता कैसी है?
3. इसमें प्रयुक्त संस्कृत और उर्दू शब्द छाँटिए।
4. छंदमुक्त होने पर भी कौन–सी विशेषता प्रभावित करती है?
5. कविता की वाक्य–रचना में लय, तुक, अलंकार, सपाट बयानी और व्यंजना में से कौन–सा गुण है?

प्रश्न– 13 अर्थबोध (गद्य)

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

नेताजी का चश्मा

–स्वयं प्रकाश

(1)

पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ही खयाल आया कि कस्बे की हृदय स्थली से सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।.....क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।..... और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेगें नहीं, पान भी नही खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेगें भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते–न–रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़–तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

प्रश्न–

(क) पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखो।

(ख) हालदार साहब ने कस्बे में न रुकने का फैसला क्यों किया?

(ग) हालदार साहब ने ऐसा क्या देखा, जिसके कारण वे भावुक हो उठे?

(घ) इस गद्यांश का मुख्य संदेश क्या है?

बालगोबिन भगत

–रामवृक्ष बेनीपुरी

(2)

कार्तिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरु हुई, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सवेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जगकर वह नदी–स्नान को जाते–गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंड़े पर, अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरु से ही देर तक सोने वाला हूँ, किंतु, एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी, जिसकी ललिमा को शुक्र तारा और बढा रहा था। खेत, बगीचा, घर–सब पर कुहाँसा हटा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुहँ, काली कमली ओढे, बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था, उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थी। गाते गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में गाते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता, अब खड़े हो जाएँगे। कमली तो बार बार सिर से नीचे सरक जाती। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, किंतु तारें की छांव में भी उनके मस्तक के श्रमबिंदु,

जब–तब, चमक ही पड़ते।

प्रश्न–

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

(ख) कातिक महीने में बालगोबिन भगत की कौन–सी गतिविधियाँ शुरु हो जाती थीं?

(ग) भोरकाल के सौदंर्य का वर्णन कीजिए।

(घ) बालगोबिन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

(3)

बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं। हाँ गाते–गाते कभी–कभी पतोह के नजदीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा–परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढकर आनंद की कौन बात! मैं कभी–कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे, उसमें उनका विश्वास बोल रहा था–वह चरम विश्वास, जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

प्रश्न–

(क) पतोहू क्यों रो रही थी?

(ख) भगत जी उसे उत्सव मनाने को क्यों कहते हैं?

(ग) लेखक भगत जी के बारे में क्या सोचती है?

(ध) लेखक को भगत जी की बातों पर विश्वास क्यों हुआ?

लखनवी अंदाज

–यशपाल

(4)

हम गौर कर रहे थे, खीरा इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म, नफीस या एब्स्ट्रेक्ट तरीका जरूर कहा जा सकता है परन्तु क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है।

नवाब साहब की ओर से भरे पेंट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया, 'खीरा लजीज होता है, लेकिन होता है सकील नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है'।

ज्ञान–चक्षु खुल गए। पहचाना–यह हैं नई कहानी के लेखक।

प्रश्न–

(क) लेखक ने किस तरीके को शिष्टता और कोमलता का तरीका कहा है और क्यों?

(ख) खीरे की विशेषता तथा उससे होने वाली परेशानी का उल्लेख कीजिए?

(ग) 'ज्ञान चक्षु खुल गए'–लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

मानवीय करुणा की दिव्य चमक

–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(5)

जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नही था, उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका

अस्तित्व था, वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दें?

प्रश्न–

(क) प्रस्तुत अवतरण में किस महान व्यक्ति की बात की जा रही है और क्यों?

(ख) वे महान पुरुष किस बीमारी से ग्रस्त थे?

(ग) लेखक के मन में क्या प्रश्न उठ रहे थे और क्यों?

(घ) महान पुरुष की कोई दो विशेषताएँ बताइए?

(6)

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं, जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुलके थे। हमारे हँसी मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते हमारी गोष्ठियों में वह गम्भीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो, हमें अपने आशीषों से भर देते।

प्रश्न–

(क) फादर को देखकर तथा बातचीत कर लेखक को क्या अनुभव होता था?

(ख) लेखक को 'परिमल' के दिन क्यों याद आते थे?

(ग) फादर को बड़े भाई और पुरोहित के समान क्यों कहा गया?

(7)

फादर बुलके संकल्प से सन्यासी थे। कभी–कभी लगता है वह मन से सन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते, ज़रूर मिलते खोजकर, समय निकाल कर, गरमी, सरदी, बरसात झेलकर मिलने के बाद, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन सन्यासी करता है।

प्रश्न–

(क) लेखक ने यह क्यों कहा कि फादर मन से सन्यासी नहीं थे?

(ख) फादर बुलके को संकल्प से सन्यासी कहकर लेखक उनकी किस विशेषता को उजागर कर रहे हैं?

(ग) कैसे पता चलता है कि फादर बुल्के और लेखक में घनिष्ठ लगाव था?

एक कहानी यह भी

–मन्नू भंडारी

(8)

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो समझ में आता ही है– क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा। यह तो डाक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुँआधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिताजी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच थे वे! एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा, तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक

छवि के प्रति भी उतनी ही सहजता। पर क्या यह संभव है? क्या पिताजी को इस बात का बिल्कुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

प्रश्न–

(क) पाठ और लेखिका का नाम लिखिए।

(ख) उपरोक्त गद्यांश से लेखिका के चरित्र की कौन सी विशेषता उभरकर सामने आती है?

(ग) लेखिका के पिता किन अंतर्विरोधों में जीते थे?

(ध) डॉक्टर साहब द्वारा लेखिका की प्रशंसा के क्या कारण थे?

(ड) कौन से दो रास्ते टकराहट के हैं?

(9)

एक घटना और आजाद हिंद फौज में मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आहवान था। जो जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा जाकर करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी वर्ग चौपड़(मुख्य बाजार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाशणबाजी। इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी ''अरे उस मन्नू की तो मति मारी गई है पर भंडारी जी आप को क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आजादी दी, पर देखिए आप, जाने कैसे–कैसे उल्टे सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है। हमारे आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान मर्यादा, इज्जत–आबरू का खयाल भी रह गया है आपको या नहीं?''

प्रश्न–

(क) पाठ और लेखिका का नाम लिखो।

(ख) उक्त गद्यांश में किस घटना का वर्णन है?

(ग) चौपड़ पर क्या घटित हुआ?

(ध) पिताजी के दकियानूसी मित्र ने पिताजी की लू कैसे उतारी?

(ड) उनकी शिकायत का लेखिका के पिताजी पर क्या असर हुआ होगा?

(च) 'लू उतारना' मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्को का खण्डन

–महावीर प्रसाद द्विवेदी

(10)

मान लीजिए कि पुराने ज़माने में भारत की एक भी एक स्त्री पढ़ी–लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की ज़रूरत न समझी गई होगी, पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए। हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं। तो चाहिए, स्त्रियों को अंपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह है कि स्त्री शिक्षा के विपक्षियों को क्षणभर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने जमाने में यहाँ की सारी स्त्रियाँ अंपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी।

प्रश्न–

(क) पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ख) वर्तमान में स्त्रियों का पढ़ना ज़रूरी क्यों माना गया है?
(ग) पुराने नियमों, रूढियों और परंपराओं को तोड़ना कब और क्यों आवश्यक हो जाता है?
(ध) वर्तमान समाज में स्त्रियों के अंपढ़ रहने से किस प्रकार की समस्याएँ और विसंगतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं?

(11)

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अंपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अंपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। वाल्मीकी रामायण के तो बंदर तक संस्कृत बोलते थे। बंदर संस्कृत बोल सकते थे, स्त्रियाँ न बोल सकती थीं। अच्छा तो उत्तर रामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवार संस्कृत थी?

प्रश्न–
(क) पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ख) लेखक नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने पर क्या सफाई देते हैं?
(ग) लेखक वाल्मीकी रामायण का उदाहरण देकर क्या सिद्ध करना चाहते हैं?
(घ) प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ क्यों नहीं कहा जा सकता?

नौबतखाने में इबादत

(12)

शहनाई के इसी मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्लाह ख़ाँ अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे में गिड़गिड़ाते हैं–''मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखें से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। उनको यक़ीन है, कभी ख़ुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकाल कर उनकी ओर उछालेगा, फिर कहेगा, ले, जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी।

प्रश्न–
(क) बिस्मिल्लाह ख़ाँ को शहनाई की मंगल–ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?
(ख) बिस्मिल्लाह ख़ाँ ईश्वर से क्या माँग रहे हैं? इससे उनकी किन चारित्रिक विशेषताओं का बोध होता है?
(ग) बिस्मिल्लाह ख़ाँ को ईश्वर पर किस बात को लेकर यक़ीन है?

(13)

अक्सर समारोहों एवं उत्सवों में दुनिया कहती है, ये बिस्मिल्ला ख़ाँ हैं। बिस्मिल्ला ख़ाँ का मतलब– बिस्मिल्ला ख़ाँ की शबनाई। शहनाई कर पातपर्य– बिस्मिल्ला ख़ाँ का हाथ है। हाथ से आशय इतना भर कि बिस्मिल्ला ख़ाँ की फूँक और शहनाई की जादुई आवाज का असर हमारे सिर चढ़कर बोलने लगता है। शहनाई में सरगम भरा है। ख़ाँ साहब को ताल मालूम है, राग मालूम है। ऐसा नहीं कि बेताले हो जाएँगे। शहनाई में सात सुर लेकर निकल पड़े। शहनाई में परवरदिगार, गंगा मइया, उस्ताद की नसीहत लेकर उतर पड़े। दुनिया कहती–सुबहान अल्लाह,

तिस पर बिस्मिल्ला ख़ाँ कहते हैं –अलहम्दुल्लिाह।

प्रश्न–

(क) 'समारोहों तथा उत्सवों में बिस्मिल्लाह ख़ाँ को किस प्रकार पहचाना जाता है?

(ख) ख़ाँ साहब बेताले क्यों नहीं हो जाते?

(ग) बिस्मिल्ला ख़ाँ की शहनाई में क्या–क्या समाया हुआ है?

(घ) बिस्मिल्लाह ख़ाँ लोगों द्वारा सुब्हान अल्लाह कहने पर क्या कहते हैं' और क्यों?

संस्कृति

–भदन्त आनंद कौसल्यायन

(14)

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई–धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति, और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है–सभ्यता।

जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा।

प्रश्न–

(क) संस्कृति किसे कहते हैं?

(ख) सभ्यता से क्या तात्पर्य है?

(ग) परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होगा और क्यों?

(15)

हमारी समझ में मानव–संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई–धागे का आविष्कार कराती है, वह भी संस्कृति है, जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है, वह भी है और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है।

और सभ्यता? सभ्यता है–संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने–पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीक़े, हमारे गमन–गमना के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीक़े; सब हमारी सभ्यता हैं। मानव की जो योग्यता उससे आत्म–विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन–रात आत्म –विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा, तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

प्रश्न–

(क) किसे–किसे संस्कृति कहा जा सकता है?

(ख) सभ्यता किसे कहा गया?

(ग) मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहेंगे या असंस्कृति?

प्रश्न– 14 विषय वस्तु (गद्य)

नेता जी का चश्मा

1 सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

2 वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल है! – कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपंनी प्रतिक्रिया लिखिए।

3 जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नहीं था तब तक अनके मानस–पटल पर उसका कौन सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

4 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ आपको क्या संदेश देता है?

5 नेताजी का चश्मा आशा का संचार करने वाली कहानी है। सिद्ध कीजिए।

बालगोबिन भगत

6 खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साध ु कहलाता थे?

7 भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

8 बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

9 लेखक को समाज का घृणिततम स्वरूप किन बातों से नज़र आता है?

10 मृत्यु के बारे में बालगोबिन भगत जी के विचार किस प्रकार के थे?

लखनवी अंदाज

11 नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक मिर्च बुरका अंततः सूंघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होनें ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है

12 लेखक ने नवाब साहब के भाव परिवर्तन के कारण का क्या अनुमान लगाया?

13 लेखक को नवाब साहब के किन हाव–भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बात चीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

14 लेखक ने नवाब साहब को नयी कहानी का लेखक क्यों कहा है?

15 बिना विचार घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है! लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

मानवीय करुणा की दिव्य चमक

16 फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसे हैं क्यों?

17 फादर बुल्के ने सन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है। कैसे?

18 फादर को सर्वाधिक छायादार फल–फूल और गंध से भरा वृक्ष क्यों कहा गया है?

19 'नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है' आशय स्पष्ट कीजिए?

20 'आज उन बाहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ' का आशय स्पष्ट कीजिए?

एक कहानी यह भी

21 लेखिका अपने पिता के जीवन से संबंधित जानकारी क्यों देना चाहती थी?

22 भाई–बहन का सारा लगाव माँ के साथ क्यों था?

23 माँ में इतनी विशेषताएँ होते हुए भी लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श क्यों नहीं बना सकी।

24 लेखिका की आरंभिक रचनाओं के पात्र कहाँ के हैं और क्यों?

25 शीला अग्रवाल ने लेखिका को साहित्य के आतिरिक्त किस क्षेत्र में प्रेरित किया?

26 लेखिका के परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता क्या थी?

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

27 कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जीने क्या तर्क देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया?

28 किन–किन दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अनपढ़ रखना चाहते हैं।

29 परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार करना चाहिए, जो स्त्री–पुरूष समानता को बढ़ाते हों – तर्क सहित उत्तर दीजिए।

30 तब की शिक्षा प्रणाली आज की शिक्षा प्रणाली से किस प्रकार भिन्न है?

31 महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का यह निबंध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है– कैसे?

नौबतख़ाने में इबादत

32 कुलसूम की देशी घी वाली दुकान में बनी कचौड़ी को ख़ाँ साहब 'संगीतमय कचौड़ी'' क्यों कहते हैं?

33 आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, कल सिल जाएगी।

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख़्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।

34 काशी में हो रहे कौन–से परिवर्तन बिस्मिल्लाह ख़ाँ को व्यथित करते थे?

35 बिस्मिल्लाह ख़ाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

36 बिस्मिल्लाह ख़ाँ काशी छोड़कर न जाने के लिए क्या क्या तर्क देते थे?

37 'मज़हब के प्रति समर्पित बिस्मिल्लाह ख़ाँ की श्रदधा काशी विश्वनाथ के प्रति भी अपार है'– कथन की सत्यता स्पष्ट कीजिए।

संस्कृति

38 आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगें?

39 न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिये गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवम् ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

40 संस्कृति कब असंस्कृति में बदल जाती है?

41 भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा क्या ये ही दो मानव–संस्कृति के माता–पिता हैं?

प्रश्न 15 संदेश/विचार (गद्य)

1 कैप्टन (चश्मेवाला) मूर्ति का चश्मा बार–बार क्यों बदल देता था?
2 'नेताजी का चश्मा' पाठ से क्या संदेश मिलता है?
3 पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन–किन रूपों में प्रकट हुई है?
4 आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?
5 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर कबीर पंथ के अनुसार जीवन की विशेषताएँ बताइए।
6 कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह निष्कर्ष देता है कि बालगोबिन भगत सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन सामाजिक भावनाओं का उल्लेख करें।
7 बालगोबिन भगत की संगीत साधना का परम उत्कर्ष कब और किस मौके पर देखा गया।
8 देशभक्ति की भावना आजकल मजाक की चीज क्यों बनती जा रही है?
9 डिब्बे की स्थिति के बारे में प्रवेश से पूर्व लेखक का क्या अनुमान था?
10 लेखक यशपाल ने नवाब साहब की प्रतिक्रिया का क्या कारण कल्पित किया?
11 लेखक यशपाल ने नवाब साहब को 'नयी कहानी' का लेखक क्यों कहा है?
12 'लखनवी अंदाज' पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है?
13 लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना फादर की याद में श्रद्धानत क्यों है?
14 फादर बुल्के की जन्म भूमि भारत नहीं थी, फिर भी वे भारत को ही अपना देश मानते थे। फादर के ऐसे विचार हमारे लिए प्रेरणा श्रोत हैं। स्पष्ट कीजिए।
15 लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की पत्नी और पुत्र की मृत्यु पर फादर कामिल बुल्के ने किस प्रकार सांत्वना दी और उसका उन पर क्या प्रभाव पडा?
16 मन्नू भण्डारी की अपने पिता से टक्कर क्यों होती थी?
17 पहले जमाने में घर की दीवारें घर तक समाप्त क्यों नहीं होती थीं?
18 आधुनिक दबाव ने फ्लैट में रहने वालों का जीवन कैसा बना दिया है?
19 'एक बवंडर शहर में मचा हुआ था, एक घर में'–मन्नू भण्डारी ने ऐसा क्यों कहा?
20 लड़की होने के कारण लेखिका का दायरा घर की चहार दीवारी तक ही सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए ऐसी स्थितियाँ हैं या बदल गई हैं?
21 स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका रेखांकित कीजिए।
22 शिक्षा से क्या तात्पर्य है? लेखक ने स्त्री शिक्षा के संबंध में किन बातों को सोलह आने मिथ्या कहा है?
23 सीता परित्याग के कारण बाल्मीकि जी ने क्या कहकर श्री राम पर क्रोध प्रकट किया?
24 स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली में क्या–क्या संशोधन होने चाहिए?
25 लड़कियों की शिक्षा के प्रति परिवार और समाज में जागरूकता आए–इसके लिए आप क्या–क्या करेंगे?
26 उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि बिस्मिल्ला खाँ वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

27 बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन–सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?
28 बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे सतर्क उत्तर दीजिए?
29 सिद्ध कीजिए कि बिस्मिल्ला खाँ के लिए सुर साधना एक सच्ची इबादत थी।
30 सिद्ध कीजिए कि काशी संस्कृति की पाठशाला है।
31 पाठ के आधार पर काशी की विशेषताओं का उल्लेख करें।
32 वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है?
33 मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है। किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब–
(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गई हों।
(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया हो।
34 मानव की योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? सतर्क उत्तर दें?
35 कार्ल मार्क्स ने अपना जीवन कैसे बिताया और क्यों?

प्रश्न– 16 कृतिका से निबंधात्मक प्रश्न

माता का आँचल

– शिवपूजन सहाय

1. भोलानाथ का अधिक समय अपने पिताजी के साथ किस प्रकार व्यतीत होता था?
2. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?
3. 'माता का आँचल' पढ़ते समय आपको भी अपने माता–पिता का लाड़–प्यार याद आ रहा होगा– अपनी इन भावनाओं को लिखिए।
4. 'माता का आँचल' में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस प्रकार भिन्न है?

जार्ज पंचम की नाक

5. नाक मान–सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी तरह व्यंग्य रचना में किस तरह उभर कर आई है? लिखिए।
6. जार्ज पंचम की नाक लगने वाली ख़बर के दिन अख़बार चुप क्यों थे?
7. मूर्तिकार ने नाक लगाने के लिए क्या–क्या प्रयास किए?

साना–साना हाथ जोड़ि

8. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?
9. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग–अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?
10. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?
11. प्रकृति ने जल–संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

12. फेंकू सरदार का चरित्र–चित्रण कीजिए।
13. भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया?

14. 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! का प्रतिकार्थ समझाइए।

मैं क्यों लिखता हूँ?

15. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?
16. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?
17. 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ के लेखक के अनुसार अनुभव और अनुभूति में क्या अंतर है?

प्रश्न– 17 कृतिका से लघूत्तरात्मक प्रश्न

माता का आँचल

1. 'माता का आँचल' पाठ के प्रमुख पात्र का वास्तविक नाम क्या था? बाबू जी उन्हें किस नाम से पुकारते थे?
2. बाबूजी भोलानाथ को खाना खिलाते थे, फिर भी माँ को संतुष्टि क्यों नहीं होती थी?
3. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों कों देखकर सिसकना क्यों भूल जाता था?
4. बच्चे अपने माता पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

जार्ज पंचम की नाक

5. बच्चों की नाक भी जार्ज पंचम की नाक से बड़ी थी– लेखक ने ऐसा क्यों कहा?
7. जार्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है?
8. 'नई दिल्ली में सब था.....सिर्फ नाक नहीं थी।' इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता था?
9. अंत में सारे समाचार–पत्र खाली क्यों थे?

साना–साना हाथ जोड़ि

10. 'साना–साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर सिक्किम के प्राकृतिक सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।
11. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे किस प्रकार रोका जा सकता है?
12. हिमशिखरों को जल स्तंभ क्यों कहा गया है? 'साना–साना हाथ जोड़ि'– पाठ के आधार पर बताइए।
13. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन–किन लोगों का योगदान होता है।
14. देश की सीमा पर बैठे फौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए।साना–साना हाथ जोड़ि'– पाठ के आधार पर बताइए।

एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

15. गौनहारिन परंपरा क्या है?
16. हमारी आजादी की लड़ाई में समाज के उपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी कम नहीं रहा है। इस कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को लेखक ने किस प्रकार उभारा है?

17. दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी, यह प्रेम दुलारी के देश–प्रेम तक कैसे पहुँचाता है?

मैं क्यों लिखता हूँ?

18. भीतरी विवशता क्या होती ह? लेखक ने इसे स्पष्ट करने के लिए किसकी चर्चा की?
19. युद्ध के समय भारत की पूर्वी सीमा पर लेखक ने क्या देखा?
20. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?